International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 395-396

मुग़लकाल में प्रचलित त्यौहार

सुरेन्द्र
शोधछात्र, इतिहास विभाग, म.द.वि. रोहतक, हरियाणा, भारत।

सारांश
मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह प्रसन्न होता है तो किसी विशेष दिन को हर्षोल्लास से मनाता है। ऐसे ही विशेष दिनों को सामुहिक रूप से मनाये जाने को त्यौहार का रूप मिल जाता है। हर वर्ग, समाज, जाति अपने–अपने हिसाब से अपनी–अपनी सुविधा के अनुसार अपने–अपने दिनों को विशेष रूप से मनाते हैं। यही विशेष दिन हिन्दुओं के त्यौहार, मुसलमानों के त्यौहार, ईसाईयों के त्यौहार के रूप में जाने जाते हैं। बादशाह का जन्मदिन भी जनता के लिए त्यौहार का ही रूप होता है। मध्यकालीन समाज में भी विभिन्न धर्मों के मानने वालों द्वारा अपने–अपने त्यौहार धूम–धाम से मनाए जाते थे। मध्यकालीन समाज में मनाये जाने वाले ऐसे ही कुछ हिन्दुओं और मुसलमानों के त्यौहारों को इस शोध–पत्र में दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : शासक वर्ग, निम्न वर्ग, जनसाधारण, होली, ईद–उल–जुहा, त्यौहार।

प्रस्तावना
मुगल काल में त्यौहारों का विशेष महतव था। मुगल काल में हिन्दु तथा मुस्लिम दोनों ही त्यौहारों का प्रचलन था। शासक वर्ग सामान्य व्यक्तियों की तरह हिन्दुओं के त्यौहार को मनाते हुए खुशी का अनुभव करते थे। अकबर दीपावली पर महल को खूब सुसज्जित कराता था। जहांगीर इस उत्सव पर जुआ खेलता था। इतना ही नहीं अपनी उपस्थिति में अपने कर्मचारियों को जुआ खिलवाता था।[1] होली के त्यौहार का वर्णन यूरोपीय यात्रियों ने काफी विस्तार से किया है। उस वर्णन से ज्ञात होता है कि तब होली का त्यौहार आज की तरह ही मनाया जाता था। शाही घराने के व्यक्ति भी उमंग–उल्लास के साथ इस त्यौहार में मौज–मजे उड़ाते थे।

विजयदशमी का त्यौहार मुख्य रूप से क्षत्रियों का त्यौहार था, परन्तु शासक होने के कारण मुगल बादशाह भी हिन्दुओं की तरह लड़ाई में काम आने वाले अपने घोड़ों को सजाते और उन्हें महत्व देते थे। मुगल शासकों के घोड़े हाथी विजयदशमी के दिन सजाए जाते थे। सम्राट उनका निरीक्षण करता था। जहांगीर ने इसका वर्णन किया है। 'जहांगीरनामा' में जहांगरी ने वर्णन किया है 'गुरुवार 24वीं भेरू को दशहरा का जलसा हुआ। भारतीय प्रथानुसार घोड़ों को सजा कर मेरे सामने लाया गया। हमारे घोड़ों का निरीक्षण कर लेने पर वे हाथी भी लाए। इसी दिन जबर्दस्तखां का मनसब बढ़ाकर एक हजारी, 400 सवार कर दिया। दशहरे का दिन यात्रारमी के लिए निश्चित किया गया था। इसलिए हम संध्या के समय प्रसन्नता तथा शुभ शकुनों के साथ नाव पर सवार हुए और अपने लक्ष्य की और चले। विजयादशमी के दिन योग्य व्यक्तियों को पुरस्कार दिया जाता था।[2]

शासक वर्ग हिन्दुओं के 'शिवरात्रि' त्यौहार को भी सोल्लास बनाता है। इस त्यौहार को योगी एवं संन्यासी शिवजी की विशेष रूप से उपासना करते हैं। जहांगीर इस त्यौहार के दिन रात–भर जागरण कर योगीजन, से तत्व की बातें करता था। अकबर भी योगियों का सत्संग करता था। अबुल फजल के अनुसार अकबर इस त्यौहार के दिन योगियों के साथ खाता–पीता था और वे उसे लम्बी आयु का आश्वासन देते थे।[3]

रक्षा–बन्धन का त्यौहार हिन्दुओं का भाई–बहन का त्यौहार है। यह भी मध्य युग में मनाया जाता था। अकबर हिन्दुओं के इस त्यौहार में भी रूचि लेता था। वह हिन्दुओं की तरह अपने हाथ में राखी बंधवाता था। दरबारी तथा दूसरे लोग बादशाह के हाथ में राखी बांधते थे। जहांगीर ने भी इस परम्परा को निभाया परन्तु थोड़े हेर–फेर के साथ। उसने अमीरों तथा जातियों के प्रधान व्यक्तियों को ही अपनी कलाई में राखी बांधने की छूट दी थी। 'आइन–ए–अकबरी' के वृतान्त के अनुसार अकबर के हाथ में बड़ी मूल्यवान राखियां बांधी जाती थी।[4]

ईदुलजुहा मुसलमानों का मुख्य त्यौहार था। इस त्यौहार के दिन बकरे, गाय आदि की बलि चढ़ाई जाती थी। शासक वर्ग भी इन उत्सवों में भारत लेता था। बादशाह की उपस्थिति में ऊँट की बलि दी जाती थी।[5] अलग–अलग प्रान्तों में गवर्नरों की अध्यक्षता में यह त्यौहार मनाया जाता था। राजधानी में ईदगाह पर भारी भीड़ लग जाती थी और सामुहिक प्रार्थना की जाती थी।

'नौ रोज त्यौहार' उन्नीस दिन तक चलता था। अधिक दिनों तक चलने के कारण इस त्यौहार के आरम्भिक और अन्तिम दिन अधिक धूमधाम रहती थी, परन्तु शाही दरबार में उन्नीस दिनों तक शान–शौकत से उत्सव बनाया जाता रह सकता था। इस त्यौहार पर खेल–तमाशे, नृत्य, संगीत आदि का समायोजन किया जाता था। इसमें ईरान आदि के संगीतज्ञ बुलाए जाते थे। बादशाह का इस दिन तुलादान किया जाता था। इस दिन योग्य व्यक्तियों की पदोन्नति कर दी जाती थी। बाजार तथ जनता के हित की मुख्य इमारतें कीमती वस्त्रों से सजाई जाती थीं। इस त्यौहार पर शाही टकसाल में 'निसार' सिक्के ढाले जाते थे और गरीबों में बांट दिए जाते थे। आस–पास के गांवों के व्यक्तियों की भीड़ इस उत्सव का आनन्द प्राप्त करने के लिए आया करती थी। मैनरिक्यू और हॉकिन्स आदि यात्रियों ने इस त्यौहार का सुन्दर और विस्तृत वर्णन किया है। मैनरिक्यू वर्णन से ज्ञात होता है कि उत्सव बहुत ही शानदारन ढंग से मनाया जाता था।[6]

हिन्दुओं के 'शिवरात्रि' त्यौहार की भांति मुसलमान लोगों का त्यौहार 'शब–ए–बारात' हुआ करता था। शाही दरबार के लोग भी इस त्यौहार में उत्साह दिखाते थे। इस त्यौहार पर 'दीपावली' की भांति प्रकाश की व्यवस्था की जाती थी और आतिशबाजी छोड़ी जाती

थी। जहांगीर और शाहजहां इस उत्सव में विशेषरूचि रखते थे। वे उत्सव के दिन दान भी देते थे।[7]

शासक वर्ग के कुछ उत्सव अपने निजी थे। उत्सवों का आरम्भ शासक वर्ग द्वारा ही किया गया था। ऐसा ही मनोरंजन के साधन के रूप में आरमी किया था मीना बाजार। मीना बाजार एक प्रकार से बाजार का ही रूप था, परन्तु वह विशेष प्रकार का था और उसको आयोजित करने का एक विशेष प्रयोजन रहता था। इसका आरम्भ हुमायूं ने किया था। हरम के भीतर ही अमीरों और उच्च घरानों की स्त्रियां और पुत्रियां दुकानें लगा कर बैठती थीं। ये दुकानें शाही परिवार के सदस्यों के लिए सामान खरीदने के लिए लगती थीं, इसलिए उन पर कीमती सामान उपलब्ध रहते थे। सामान पसन्द आने पर ऊँचे मूल्य पर भी उसे खरीद लिया जाता था। अबुल फजल के अनुसार मीना बाजार लगाए जाने का उद्देश्य था प्रजा की वास्तविक स्थिति से अवगत होना।

मुसलमानों का एक त्यौहार 'अब–ए–पेशान' था। यह हिन्दुओं के होली त्यौहार जैसा था। संभव है हिन्दुओं के मस्ती भरे त्यौहार होली से प्रेरित होकर राग–रंग और विलासिता के प्रेमी मुस्लिम बादशाहों ने हरम के भीतर आनन्द मनाने के लिएइस नए उत्सव की कल्पना कर ली हो। होली की तरह इस त्यौहार पर शाहजादे, अमीर तथा मन्त्री एक–दूसरे पर गुलाब जल छिड़कते थे। आगे इस अवसर पर अमीर आदि बादशाह को भेंट भी देने लगे। होली से मिलता–जुलता होने के कारण शाही व्यक्तियों के इस त्यौहार को अब्दुल लाहौर ने 'ईद–ए–गुलाबी' का नाम दिया था।[8]

मुस्लिम शासक अपने मान–सम्मान के प्रति बहुत सजग थे। वे जनसामान्य से अपने आपको बहुत ऊँचा मानते थे। इसी कारण उनका हरेक आयोजन बहुत बड़े खर्च द्वारा सम्पन्न होता था। शाही परिवार में जन्म लेना वे अपने लिए गौरव की बात मानते थे, इसी कारण वे अपने जन्म दिवस को धूमधाम से मनाकर खुश होते थे।

जनता भी शासक का जन्मदिन मनाती थी। पांच दिन तक तरह–तरह के आयोजनों द्वारा जन्मदिन मनाने का क्रम चलता था। बादशाह अमीरों तथा उच्च पदाधिकारियों को शानदार दावत देता था। शायर शासक की प्रशंसा में कविता पाठ कर पुरस्कार प्राप्त करते थे। गरीबों को भी इस अवसर पर दान दिया जाता था। अकबर अपने वजन के बराबर वस्तुएं गरीबों में बंटवाता था। भेंटों का आदान–प्रदान प्रायः दीवाने ग्राम में बैठ कर होता था। इस अवसर पर नृत्य–गायन का आयोजन किया जाता था। अमीरों और पदाधिकारियों की पत्नियां शाही महल में जाकर बेगम को कीमती भेंटे देती थीं।[9] बादशाह अपने जन्म दिन पर कई आयोजनों के सम्पन्न होने पर राजमाता से मिलने जाता था। बादशाहों की भांति शाहजादों के भी जन्मदिन मनाए जाते थे। परन्तु उन पर कम धूमधाम रहती थी।[10]

इस प्रकार यह तो निश्चित तथ्य है कि शासक वर्ग का जीवन अत्यधिक शान–शौकत का जीवन था। उनका रहन–सहन, खान–पान, मनोरंजन और शौक सभी बड़े महंगे थे। मध्ययुग में शासक वर्ग की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। हिन्दुओं की तुलना में मुलसमान अपने आपको ऊँचा मानते थे और उनमें भी शासक वर्ग अपने आपको बहुत श्रेष्ठ और सम्माननीय मानता था। वह विलासिता का जीवन–यापन करता था। शासन वर्ग के हरम में असंख्य नारियां रहती थीं। उन लोगों की सेवा के लिए असंख्य दास–दासियां रहती थीं। दिल्ली के सुल्तानों के बाद मुगल बादशाहों ने उदार दृष्टिकोण अपना कर हिन्दुओं की भी बहुत सी बातें अपना ली थीं। इससे उनके मनोरंजन का और सम्मान का क्षेत्र व्यापक हो गया था। मुगल शासकों में से अकबर, मुसलमानों और हिन्दुओं दोनों को साथ लेकर चला था। उसके मुस्लिम धर्म, मुस्लिम ढंग के जीवन के प्रति कट्टर दृष्टिकोण नहीं था। वह अपनी समन्वयवादी जीवन–पद्धति के आधार पर हिन्दु–मुसलमान दोनों जातियों में लोकप्रिय हो गया था।

निष्कर्ष

इस हम अध्ययन के आधार पर हम कह सकते हैं कि दिल्ली के सुल्तानों के बाद मुगल बादशाहों ने उदार दृष्टिकोण अपना कर हिन्दुओं की भी बहुत सी बातें अपना ली थीं। शासक वर्ग का जीवन अत्यधिक शान–शौकत का जीवन था। उनका रहन–सहन, खान–पान, मनोरंजन और शौक सभी बड़े महंगे थे। हिन्दुओं की तुलना में मुलसमान अपने आपको ऊँचा मानते थे और उनमें भी शासक वर्ग अपने आपको बहुत श्रेष्ठ और सम्माननीय मानता था। त्यौहारों पर बहुत अधिक खर्च होता था। जनसाधारण शासक वर्ग की कृपा पर निर्भर रहना पड़ता था।

सन्दर्भ

1. परमात्मा शरण, मध्यकालीन भारत, नन्द किशोर एवं ब्रदर्स, बनारस, 1950, पृ. 231
2. जहांगीरनामा, अनुवादक ब्रजरत्नदास काशी, पृ. 301
3. अल्लम अब्दुलाह, युसुफ अली, मध्यकालीन भारतीय समाज एवं संस्कृति, पृ. 97
4. वही, पृ. 105
5. मनूची, स्टोरियो डो मोगोर, भाग–2, पृ. 349–50
6. मैनरिक्यू, भाग–2, पृ. 195–200
7. अल्लाम अब्दुलाह, युसूफअली, मध्यकालीन भारतीय समाज, पृ. 134
8. अब्दुल हमीर लाहौरी, पादशाहनामा, अनुवादक केश्वर ठाकुर, पृ. 229
9. अबुलफजल, गलीम्पस ऑफ मीडिवल इण्डियन कल्चर, पृ. 126
10. मनूची, पूर्वोक्त, पृ. 345